ISSN 2395-051X

आधुनिक जीवन में मूल्य बोध एवं युवा तथा समाज की भूमिका

डॉ. बिन्दु श्रीवास्तव
सहा. प्रा. - अर्थशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आधुनिक युग के बदलाव की रफ्तार को विज्ञान एवं तकनीकी के विकास ने इतनी गति दे दी है कि जीवन शैली के परिवर्तन का प्रवाह इतना बढ़ गया है कि एक पीढ़ी को दूसरी पीढ़ी अजनबी की भाँति नजर आने लगी है इसका मुख्य कारण मूल्य बोध का अंतर है और यह अंतर इतना बढ़ता चला जा रहा है कि एक पीढ़ी के जीवन मूल्य दूसरी पीढ़ी के लिए अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। इसका मुख्य कारण है कि जीवन मूल्य के प्रेरणा स्त्रोत घटक धर्म, राजसत्ता, सामाजिक वातावरण (मर्यादा परम्परागत संस्कार का विलुप्त होना) अपनी भूमिका को सही अर्थों में निभा नहीं पा रहे हैं क्योंकि विज्ञान और तकनीकी विकास के साथ हम अपनी संगति नहीं बैठा पा रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य - आधुनिक जीवन में गिरते हुए मूल्य बोध को ऊँचा करने में युवा शक्ति और समाज की भूमिका का अध्ययन करना है।

परिकल्पना - समाज और युवा शक्ति मिलकर गिरते हुए नैतिक मूल्यों को सही करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर बढ़ रहे अपराध, अन्याय, अत्याचार, अलगाव, गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार को रोककर एक नैतिक मूल्यों से युक्त शान्तिपूर्ण सामाजिक जीवन की कल्पना को साकार कर सकते हैं।

समाज की धरोहर क्यों इतनी निर्बल होकर अपना अस्तित्व खोती जा रही है इसका मुख्य कारण वर्तमान में उपभोक्ता संस्कृति से उत्पन्न मानसिकता है जिससे प्रेरित होकर हमारे युवक अधिकार व धन पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं और उन्हें इस कार्य के बल देने का कार्य वोटों की राजनीति गरीबी, वेरोजगारी, भ्रष्टाचार, अत्याचार, अन्याय समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्यायें कर रही हैं। क्योंकि समाज में जन्मे बच्चे को संस्कार देने का कार्य परिवार की जिम्मेदारी है बचपन से ही उसे अच्छे संस्कार दिए जायें सही गलत का अर्थ सही मायनों में उसे समझाया जाए और नैतिक जीवन मूल्यों के साथ-साथ अपनी संस्कृति से भी परिचित कराया जाए क्योंकि नैतिक मूल्य ही हमारी संस्कृति को बताते हैं। परिवार में जब बच्चा धीरे-धीरे वड़ा होने लगता है तो वह व्यवहार, आचार-विचार, शिष्टता सब परिवार के सदस्यों से ही सीखता है और इन सव वातों का उसकी बढ़ती उम्र में बहुत प्रभाव पड़ता है इस समय हमारा दायित्व है कि बच्चे को शिष्टता से परिचित कराया जाए क्योंकि आज का मनुष्य विकास का एक यंत्र बनकर रह गया है उसने आज दिन ऊंचाईयों पर अपने कदम रख लिए हैं उस अनुपात में उसकी चेतना का विकास नहीं हो पा रहा है इसका मुख्य कारण उसमें सहन शक्ति का अभाव है इसी कारण उसमें नैतिक मूल्यों के प्रति उदासीनता है जो अशिष्टता की जन्मदायिनी वनती जा रही है। ये सब भी कहीं न कहीं हमारी अंतर्द्वन्द मूल्य बोध की कमी एवं

सबसे बड़ी समस्या समय की कमी होती जा रही है माता-पिता (अभिभावक) धन एकत्रित करने में व्यस्त है अपना बहुमूल्य समय बच्चों के साथ व्यतीत न करने के कारण बच्चे ज्ञान के अभाव में गलत राह पर चल पड़ते हैं। और बाहर का परिवेश उसे उस स्थान पर छोड़ देता है जहां से उसके विकास के मार्ग ही बंद हो जाते हैं। आज का युवा मोबाइल फोन व सोाल साइटस पर इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास अपनों के लिए ही समय नहीं है तो दूसरों को क्या देगा और दूसरी तरफ देखा जाए तो जो युवाओं ने अच्छी शिक्षा प्राप्त कर ली है उनमें पैसा कमाने की ऐसी प्रवृत्ति जागृत हो गई कि उन्हें लगने लगा है कि विदेशी मुद्रा ही शायद जीवन की सुख सुविधायें दे सकती है इसलिए वे विदेश जाने को दण्डवत है क्योंकि उनका कहना है कि क्या माम-डैड ये भारत में रखा ही क्या है? परंतु शिक्षा प्राप्त करते समय हमारी शिक्षा पद्धति ने उन्हे इस बात का ज्ञान ही नहीं कराया कि प्राकृतिक सम्पदा से धनी यह भारत भूमि विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है और विश्व को बाजार से जोड़ने के लिए भारतीय बाजार का निर्माण कर रही है। आधुनिक नीतियाँ जो देश के विकास के लिए बनाई जा रही हैं उन्हें पाठ्यक्रम में लाकर समझाना होगा ताकि आज का युवा दिगभ्रमित होकर गलत राह न चुने।

भारतीय मनीषीयों की विचारधारा पर प्रकाश डालना ही होगा और आज के दिगभ्रमित भारतीय युवाओं को समझाना होगा कि पहले हमारे मनीषी कहते थे कि माता-पिता एवं अतिथि ये तुम्हारे देवता हैं इनकी सदा सुश्रुशा करना धर्म समझो एवं जिस भूमि की मिट्टी से तुम्हारी देह बनी है जिसकी गंगा का निर्मल जल पिया है और जिसके गौरव के सामने संसार का कोई देश ठहर नहीं सकता उस पवित्र भारत भूमि में रहते हुए उसके यश को उज्जवल करने के कार्य भी तुम्हारा है। इसलिए भारतीय संविधान में भी कुछ मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है इनमें लोकतंत्र, समाजवाद धर्म निरपेक्षता, सर्वधर्म समभाव, समता और न्याय इन मूल्यों के प्रति धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में व्याप्त हताशा ही मूल्यों के अस्तित्व को संकट की ओर ले जा रही हैं इसे बचाने का कार्य युवा व समाज को एक होकर करना होगा अन्यथा समाज में असंतोष, अलगाव, असमानता, अन्याय, अत्याचार, अपमान, असफलता, संघर्ष, हिंसा इत्यादि सब मिलकर आधुनिक जीवन में जीवन यापन कर हम सभी लोगों के जीवन मूल्यों को नष्ट कर देंगे और हम जीवन मूल्यों को ढूंढ़ते ही रह जाएंगे क्योंकि नैतिक मूल्यों का संबंध अधिग्रहण से होता है। समाज से सत्य, अहिंसा, दया, शान्ति, क्षमा, सादगी सहानुभूति सहयोग सब गायब होते जा रहे हैं सादगी आधुनिक जीवन का मूल्य नहीं बल्कि दरिद्रता और पिछड़ेपन की पहचान हो गया है। वर्तमान पीढ़ी के लिए भौतिक वस्तुओं से युक्त जीवन जीने में ही जीवन की सम्पूर्णता नजर आती है और सादगी शब्द का अर्थ उनके जीवन से नदारत है इसलिए त्याग की भावना ही नहीं है। जीवन की गति इतनी तेज है कि उसमें स्थिरता या शान्ति का नामोनिशान नही है इसलिए आज इस बात की महत्ती आवश्यकता है कि अगर आधुनिकता के इस जीवन में नैतिक मूल्यों को बचाना है तो समाज और सबसे सशक्त युवा वर्ग को मिलकर कदम उठाना होगा और बढ़ रहे अपराध, अन्याय, अत्याचार को समाप्त करके नैतिक मूल्यों से युक्त शान्तिपूर्ण सामाजिक जीवन की कल्पना को साकार करना होगा। इसके लिए समाज को सशक्त भूमिका निभाना होगा साथ ही युवाओं को धन की जगह संस्कार की होड में शामिल करना होगा क्योंकि वे ही आधुनिक जीवन मूल्यों की दशा और दिशा को बदलने में सक्षम हैं और अभिवाहक को अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के साथ बच्चों पर ध्यान देना होगा जिससे बच्चों को सही राह मिले और देश को एक अच्छा नागरिक मिल सकेगा।